ESTD : 1954

दिल्ली प्रिंटर्स एसोसिएशन

मासिक

समाचार पत्रिका

संपादक : एच. एल. खन्ना केवल सदस्यों के लिए निःशुल्क वितरण हेतु अंकः अगस्त-सितम्बर 2020

भारत में प्रिंटिंग उद्योग का भविष्य

'इंटरनेट ऑफ थिंग्स' प्रिंटिंग का ढांचा बदल देगा

इंटरनेट और आईटी टेक्नॉलॉजी से प्रिंटिंग इंडस्ट्री में कई क्रांतिकारी परिवर्तन आ चुके हैं। लेकिन साथ ही प्रिंटिंग उद्योग के अस्तित्व का खतरा भी पैदा हो गया है। 'इंटरनेट ऑफ थिंग्स' नामक नई टेक्नॉलाजी को अपनाने की चर्चा चल रही हैं इसे शार्ट में IoT कहा जाता है। इसी टेक्नॉलोजी और प्रिंटिंग उद्योग पर प्रभाव पड़ने के बारे में परिचयात्मक लेख अंदर के पृष्ठों पर अवलोकन के लिए प्रस्तुत है। इस लेख में आने वाले समय के उद्योगों की झलक को अनुभव किया जा सकता है।

ESTD : 1954

President
Mr. Kewal Krishan Singhal
98111-15945.
Imm. Former President
Mr. Mahinder Budhiraj
9312241788
Vice-presidents
Mr. Ashok Kumar Nandra
92500-55555
Mr. Puneet Talwar
98110-81291
Mr. Sandeep Aggarwal
98110-40044
Hon. General Secretary
Mr. Meghraj Bhati
98103-52633
Joint-secretaries
Mr. Prashant Aggarwal
9971214455
Mr. D. K. Vohra
98105-14145
TREASURER
Mr. Atul Goel
98100-03943

EXECUTIVE COMMITTEE MEMBERS
Mr. Ajay Sharma
8178429924
Mr. Ashish Verma
9350984666
Mr. Ashok Aggarwal
9810064038
Mr. Deepak Bhatia
9810115023
Mr. M. N. Pandey
9811089829
Mr. P. K. Chauhan
9899094076
Mr. P. S. Pathania
9810420879
Mr. Prakash Dass
98187-24948
Mr. Puneet Bajaj
9953322396
Mr. Raghu Nandan Sharma
9811481282
Mr. S.S. Lunkar
9868150401
Mr. Sanjay Sharma
9810643710
Mr. Shiv Mittal
9811078868
Mr. Simranjot Singh Bhatia
9990000270
Mr. Sunil Jain
9999769787
Mr. Veenu Gupta
9810039765
Mr. Vijay Goel
9818321000
Mr. Vijay Jain
9811083737
Mr. Vikas Gaur
9871155294
Mr. Vivek Jain
98102-77339
Executive Secretary
H.L. Khanna
9958043222

Delhi Printers' Association
Flat No. 26A,
Shanker Market,
New Delhi-110001
Tel. : 011-23414415
Telefax : 011-23412574
Email : delhiprinter@hotmail.com
delhiprintersassociation@gmail.com

महामारी

कोरोनावायरस क्या है? कैसे फैलता है, लक्षण और बचाव के उपाय

कैसे फैलता हैं कोरोना वायरस

तेजी से फैल रहा कोरोना वायरस (Coronavirus) क्या है? सबसे पहला सवाल ये लोगों के जहन में आ रहा है। डब्ल्यूएचओ भी इसके लिए कई सारी चेतावनियां जारी कर चुका हैं बल्कि वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन ने तो चीन में स्वास्थ्य आपातकाल तक घोषित कर दिया है। यह बीमारी ज्यादा क्राउडेड एरिया में फैल सकती है। जैसे जहां पर ज्यादा से ज्यादा लोगों का जमघट इकठ्ठा हो। कोरोना वायरस सांस या छूने से भी फैल सकता है। छींकने, खांसने से भी फैल सकता है।

कोरोनावायरस के लक्षण क्या होते हैं?

सबसे पहली और जरूरी बात जो आपको ध्यान रखनी चाहिए वह यह कि डरें नहीं. डरना किसी भी चीज का हल नहीं। न ही हर किसी को शक की नजर से देखें. आपको जरूरत है पूरी जानकारी पाने की। कोरोना वायरस के लक्षणों को समझना जरूरी है। यह वायरस इंसान की किडनी को नुकसान पहुंचा सकता है। आमतौर पर कोरोना वायरस के लक्षण निमोनिया जैसे हो सकते हैं। इसमें जुखाम, गले में दर्द, सांस लेने में दिक्कत, खांसी, बुखार जैसे लक्षण दिखते हैं। इससे ग्रस्त लोगों में सांस से जुड़ी समस्याएं, बुखार, खांसी आदि हैं। ज्यादा गंभीर मामलों में संक्रमण की वजह से निमोनिया, सीवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम, गुर्दे खराब होना और मौत तक हो सकती है।

कोरोनावायरस से कैसे बचा जा सकता है?

अगर किसी को अचानक से खांसी की समस्या शुरू हो जाए तो बेहतर होगा आप उनसे उचित दूरी बना के रखें और उनसे कहें कि वह खांसी करते वक्त अपने मुंह को किसी कपड़े से ढक कर रखें। या फिर मास्क लगा लें। हाथों को धोते रहे या सेनेटाइजर से साफ करते रहें।

दिल्ली प्रिंटर्स एसोसिएशन का WhatsApp Number

पिछले कुछ समय से सदस्यों ने देखा होगा कि डीपीए द्वारा सदस्यों को आवश्यक तथा महत्वपूर्ण जानकारी एवं सूचनाएं न केवल पत्रिका में छापकर तथा ई-मेल द्वारा भेजी जा रही हैं, अपितु **WhatsApp** के माध्यम से भी लगातार समय-समय पर भेजी जा रही हैं। अत: सदस्यों से अनुरोध हे कि वे डी.पी.ए. का **WhatsApp नम्बर 9971371109** अपने मोबाइल में सेव कर लें। यदि कोई सदस्य डीपीए को कोई सुझाव तथा सूचना देना चाहता है तो वह इसी नम्बर के द्वारा भेज सकता है।

वर्ष 2020–2021 के वार्षिक शुल्क के लिए सदस्यों से अनुरोध

जिन सदस्यों ने अपना वर्ष 2020–2021 का वार्षिक शुल्क अभी तक नहीं भेजा है उन्हें याद दिलाया जा रहा है कि अपना शुल्क स्वयं/कोरियर/डाक द्वारा शीघ्रअतिशीघ्र भेजने की कृपा करें। कुछ सदस्य ऐसे भी हैं जिनका वार्षिक शुल्क 2019–2020 का भी नहीं आया है, उन्हें फिर याद दिलाया जाता है कि लगातार दो वर्ष तक वार्षिक शुल्क न आने पर एसोसिएशन की सदस्यता स्वयं समाप्त हो जाती है।

यदि आप वार्षिक चंदा बैंक में सीधे जमा करना चाहते हैं तो संस्था के निम्नलिखित दो बैंक खातों में से किसी में भी जमा करवा सकते हैं तथा जमा करने के बाद संस्था को सूचित कर दें। बैंक का विवरण इस प्रकार है:

Delhi Printers' Association
Saving A/c No. 90042010031370
IFSC Code-SYNB0009004
Bank Name - Syndicate Bank

Delhi Printers' Association
OD A/C No. 0022414008455
IFSC Code-HDFC0CTJCBL
Bank Name-The Janata
Co-Operative Bank Ltd.

NEW WEBSITE OF DELHI PRINTERS' ASSOCIATION

DPA has launched its revamped website recently. Please explore the updated website. We would be grateful for any feedback about further improvement.
Explore at: www.delhiprintersassociation.org

Printing, Processing & Binding by
printways
PRINT-WAYS
PREMIUM QUALITY PRINTING UNIT

Deals in :
All Types of Offset Printing, Lamination & Binding Work etc.

VISIT US AT :
182, FIE,
Patparganj Industrial Area,
Delhi-110092,
M.: 9971590075, 9899094076
Email : printways02@gmail.com

अध्यक्ष की कलम से

इस वर्ष के स्वतंत्रता दिवस के भाषण में प्रधानमंत्री जी ने 'मेक इन इंडिया' के एजेन्डे को 'मेक इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड' का नया नाम दिया जो भारत की गुणवत्ता के उत्पादों, प्रतिस्पर्धी निर्माण तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकरण के साथ एक शक्तिशाली व्यापारिक राष्ट्र होने की आकाँक्षा को दर्शाता है। यद्यपि यह उद्देश्य सदा उनका लक्षित सपना रहा है, किन्तु लद्दाख सीमा पर चीन के हाल की भिडन्त के रवैये के मद्देनज़र चीन से आयात घटाने के संकल्प ने भारत को उस देश की अर्थव्यवस्था को एक झटका देने के लिए मजबूर किया है। एक मजबूत व्यापारिक राष्ट्र अपना ऐजेन्डा सैट करने और उसके अनुकूल सौदेबाज़ी कर पाने की बेहतर स्थिति में होता है।

यद्यपि दशकों से चली आ रही भाई-भतीजावाद प्रणाली तथा लालफीताशाही सरकार के इस महान लक्ष्य की उपलब्धि में आड़े आती है, किन्तु 'ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस' उद्देश्य के तहत बड़ी बाधाओं को हटाने के कठोर सुधारात्मक उपाय चल रहे हैं और इनके परिणाम भी दिख रहे हैं। भारत में अत्याधुनिक बुनियादी ढाँचे के निर्माण की क्षमता है जिसे निर्माता समुदाय द्वारा किए गए लगातार और समर्पित प्रयास तेज़ गति से वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

आत्मनिर्भता के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु देश में निर्माण एवं व्यापार को बढ़ावा देने और अन्य देशों पर निर्भरता कम अथवा समाप्त करने के लिए भारत को उत्तम गुणवत्ता प्राप्ति पर ध्यान केंद्रित करते हुए कच्चे माल पर ड्यूटी में कटौती करके इनपुट लागत को कम करना चाहिए, सस्ती दरों पर निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना चाहिए तथा सस्ते व कुशल कर्मचारी भर्ती करने चाहिए जो समय पर माल बनाने को आतुर रहते हों। साथ ही सबसे महत्वपूर्ण है कि घरेलु बाज़ार में इन उत्पादनों की माँग तेज़ी से पैदा की जाए। अंतरराष्ट्रीय स्तर की गुणवत्ता हमारे MSME यूनिट प्राप्त कर सकें इसके लिए उन्हें डिज़ाइन स्टूडिओ, इनोवेशन लैब तथा शीर्श गुणवत्ता के बुनियादी ढाँचे जैसी आर एंड डी की सुविधाएँ स्थापित करने का समान अवसर दिया जाना चाहिए। हमें इलैक्ट्रौनिक्स, दूर संचार, परिधान, ऑर्गेनिक रसायन, हस्तशिल्प आदि माल का उत्पादन करने की आवश्यकता है जिनकी बाहरी देशों में बड़ी माँग रहती है।

जहाँ तक हमारे मुद्रण उद्योग का सवाल है हमारा पहला उद्देश्य उच्च स्तर की मुद्रित सामग्री के निर्यात कर पाने के साथ स्थानीय ग्राहकों की माँग का ध्यान भी रखना है जो ऐसी इसी उच्च स्तर की छपाई चाहते हैं। देश में मुद्रण और सम्बद्ध मशीनरी बनाने वाले निर्माता नवीनतम एवं उच्चतम स्तर के तकनीक की मशीने बाज़ार में लाने के लिए आत्मनिर्भर नहीं हैं। वे आवश्यक महँगे कम्पोनैन्ट आयात करके उन्हें उपयोग में लाते हैं। अतः हमारे निर्माताओं को युद्ध स्तर पर विदेशी तकनीक के महँगे घटक व पुर्ज़े आयात करने के स्थान पर उनसे भी बेहतर तकनीक विकसित करनी होगी। जब इस प्रकार के प्रयास सफल होंगे तभी आयात कम करके देश प्रगति की ओर अग्रसर हो सकेगा। इसके लिए हमारी सरकार को प्रोत्साहन, मार्ग दर्शन तथा आर्थिक सहायता भी प्रदान करनी चाहिए।

–केवल कृष्ण सिंघल, अध्यक्ष

महासचिव की कलम से

छः माह व्यतीत हो चुके हैं किंतु कोरोनावायरस का कहर थमने का नाम नहीं ले रहा है। फिर भी जनता एवं राज्य सरकारों की लगातार माँग होने के कारण केन्द्र सरकार ने अलग.अलग चरणों में ढील दी ताकि सामान्य जनजीवन, उद्योग.व्यापार आदि फिर से ढर्रे पर लौट सकें तथा देश की अर्थव्यवस्था में भी जान फूंकी जा सके। घर से बहार निकले लोगों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए उन्हें चेहरे पर मास्क लगाने, आवश्यक दूरी बनाये रखने एवं सैनेटाइज़र आदि से बार.बार हाथ धोने रहने की सख्ती से हिदायत दी गयी है।

अन्य उद्योगों की भाँति यद्यपि मुद्रण संस्थान छपाई करने के लिए खोल दिए गए हैं किन्तु दुर्भाग्य से मुद्रण व्यवसाय पर चारों ओर से काले बादल मंडराने लगे हैं तथा एक-एक करके ज़बरदस्त झटके लग रहे हैं। अगस्त में ही एस.टी.एफ. तथा पुलिस टीमों द्वारा मेरठ ज़िले में डाले गये छापे में एक अवैध प्रिंटिंग प्रैस में NCERT की 35 करोड़ रुपये की 364 प्रकार की चोरी से छापी गयीं पुस्तकें बरामद हुईं। गहन छानबीन के पश्चात् पता चलेगा कि कितने करोड़ की ऐसी छपी पुस्तकें बिक चुकी हैं तथा ऐसी कितनी अन्य अवैध प्रैस इस प्रकार के कांड में लिप्त हैं। इस घटना ने न केवल NCERT अपितु उनके पैनल पर वैधानिक रूप से इस प्रकार की स्कूली पुस्तकें छाप कर देने वाले मुद्रक एक बड़े घाटे को खाने को मजबूर हो गए हैं। कोविड के कारण पहले से बन्द पडी इन मुद्रक इकाइयों का भविश्य अन्धकारमय हो गया है।

मुद्रण व्यवसाय ऐसे घाटे सह पाता, तभी इसे सरकार की ओर से एक और झटका दिया गया। डिजिटीकरण को बढ़ावा देने एवं गिरती अर्थव्यवस्था के तहत सरकारी संस्थानों का खर्च कम करने के लिए केंद्र सरकार ने अकस्मात एक आर्डर जारी करके उन सभी महकमों को भविष्य में वॉल एवं टेबल कैलेन्डर, डायरियाँ, कॉफी टेबल बुक, ग्रीटिंग कार्ड आदि छपवाने की मनाही कर दी है। दिल्ली प्रिंटर्स ऐसोसियशन ने वित्त मंत्रालय को एक ज्ञापन देकर माँग की है कि यह आर्डर वापिस लिया जाए ताकि वे मुद्रक जो वर्षों से इस प्रकार का सीज़नल काम करते आ रहे हैं उनका भविष्य चौपट होने से बचाया जा सके। हाल ही में आयातित माल पर अंकुश लगाने के लिए सरकार ने आयात किए गए कागज़ पर पुस्तकें छापने पर रोक लगा दी है। मुद्रण उद्योग की भांति पब्लिशिंग तथा कागज़ उद्योगों को भी भारी क्षति पहुँची है। शैक्षणिक संस्थान बन्द रहने के कारण ये तीनों, जो एक-दूसरे के पूरक हैं, कापियाँ-किताबें तथा स्टेशनरी न बिकने के कारण तेज़ी से बन्द होने के कगार पर हैं। व्यवसाय के धूमिल वातावरण में भी डीपीए द्वारा सम्बंधित संस्थानों को दिए गए ज्ञापनों के फलस्वरूप सदस्यों को राहत भी मिली है। अगस्त 14 के अपने आर्डर द्वारा DSIIDC ने रीलोकेशन स्कीम के तहत प्रभावित सदस्यों को औद्योगिक क्षेत्रों में अलाट किए गए प्लाटों के पोज़ेशन तथा लीज़ डीड करवाने की अंतिम तिथियाँ बढ़ा दीं जिसकी कॉपी सभी सदस्यों को भेजी गयी। हाल ही में कोरोनावायरस के कारण अप्रैल एवं मई माह में उद्योग.व्यापार ठप रहने की वजह से क्स्त्व ने इन दोनों माह के अपने फिक्स्ड चार्ज में पचास प्रतिशत की छूट देकर कमर्शियल एवं औद्योगिक संस्थानों को बड़ी राहत दी। अनिश्चित काल तक चलने वाली संक्रमण की परिस्थिति में मुद्रकों को वैकल्पिक मार्ग खोजने पर विचार करना होगा।

–मेघराज भाटी, महासचिव

ARE PAPER SOURCING WOES WEIGHING YOU DOWN?

NEED BULK SUPPLY ON SHORT NOTICE?

HI'S & LOW'S AFFECTING PRODUCTIVITY?

NOT SATISFIED WITH QUALITY?

TIRED OF DELAYS?

FEELING CHEATED / BULLIED ON COST?

Regd.office :- Plot No.906-912,1st Floor Maharaja Agarsen Market, Chota Chhipiwara, Chawri Bazar, Delhi-110006
Noida Office :- C-18, 3rd Floor Sec-2, Noida-201301
Contact No. :- +91 120 4277662, +91 9870108009

VRINDA PAPERS PVT. LTD.
Complete Paper Solutions

भारतीय मुद्रण उद्योग का भविष्य

प्रिंटिंग उद्योग में एक प्रमुख कदम इंटेलिजेंट वर्कप्लेस सोल्यूशंस को अपनाना है

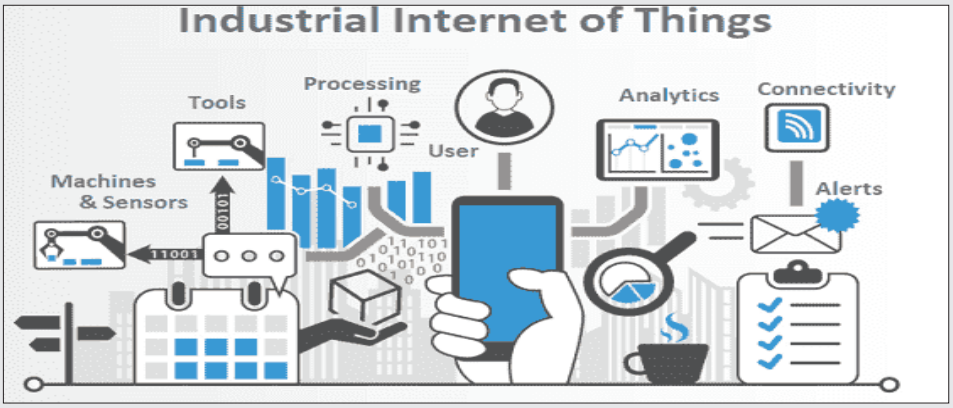

आईओटी (IOT) का पूरा नाम इंटरनेट ऑफ थिंग्स हैं. वहीं काफी जगहों पर आपको इंटरनेट ऑफ थिंग्स की जगह आईओटी (IOT) लिखा हुआ मिलेगा. इस शब्द को केविन एशटन द्वारा पहली बार इस्तेमाल किया गया था और उन्होंने कहा था कि ये एक ऐसी प्रणाली है, जहां इंटरनेट सर्वव्यापक सेंसर के माध्यम से भौतिक दुनिया से जोड़ा जा सकता है.

प्रिंटिंग उद्योग में एक प्रमुख कदम इंटेलिजेंट वर्कप्लेस सर्विसेज (IWS) को अपनाना है। यह परिवर्तन ऑन–प्रिमाइसेस मुद्रण प्रबंधन की जटिलताओं को कम करेगा। क्योंकि सभी प्रिंट कार्य एक वर्चुअल प्रिंट सर्वर को सबमिट किए जाते हैं। और रखरखाव को कम करने और दक्षता में सुधार करने वाले ऑन–प्रिमाइसेस सर्वर के उन्मूलन को सुनिश्चित करते हैं।

भारतीय विनिर्माण उद्योग तेजी से प्रोटोटाइप के माध्यम से एक महत्वपूर्ण बाजार की हिस्सेदारी पर कब्जा करने के लिए एक प्रारंभिक चरण में 3 डी प्रिंटिंग तकनीक है। एक और लाभ यह है कि कोई भी भौतिक उत्पादन और इससे जुड़ी लागतों को समाप्त कर सकता है।

- इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IOT) तकनीक में प्रिंट उद्योग में आमूलचूल परिवर्तन करने की शक्ति है। जो मोबाइल उपकरणों के बड़े पैमाने पर प्रसार और उनके विभिन्न प्लेटफार्मों को जोड़ने के लिए तेजी से अनुकूल है।
- इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IOT) और सुलभ सेंसर और नेटवर्किंग तकनीकों को प्रिंटर हार्डवेयर में जोड़कर जो पहले से ही क्लाउड कनेक्टिविटी और बेहतर दस्तावेज प्रसंस्करण क्षमताओं और बुद्धिमत्ता का उपयोग करता है । व्यवसाय प्रिंट उपयोग में मूल्यवान वास्तविक समय अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं।

संपूर्ण मूल्य श्रृंखला के लिए उपलब्ध एंड–टू–एंड समाधान के एक पूरे सूट के साथ, निर्माण कंपनियां अपने संचालन का अनुकूलन कर सकती हैं । और उत्पादकता में कई गुना सुधार कर सकती हैं।

भारतीय मुद्रण उद्योग पिछले 15 वर्षों से लगातार विकसित हुआ है। यह साल दरसाल 12 प्रतिशत की दर से फलता–फूलता है जिसमें 2,50,000 व्यापक, मध्यम और कॉम्पैक्ट प्रिंटर शामिल हैं। इसलिए वार्षिक अनुमान है कि पैकेज्ड प्रिंटिंग व्यवसाय पर इसका प्रभाव पड़ता है। क्योंकि इसका प्रसार 17 प्रतिशत वार्षिक की दर से अनुमान है। मौद्रिक मुद्रण पर 10 प्रतिशत और डिजिटल प्रिंटिंग में 30 प्रतिशत वृद्धि हुई है।

इसके बारे में संक्षिप्त जानकारी यह बताती है कि खाद्य, पेय पदार्थ से लेकर अन्य उद्योगों के लिए प्रासंगिक बाजार में कमोडिटी ट्रांसपोर्ट के लिए कैसे, कहां और क्यों उपलब्ध हैं, जैसे कि समुद्र, जमीन, और हवा में प्रिंटिंग उद्योग कैसे, क्यों और कहां से छपाई का व्यवसाय बन गया है।

आदिम भारत वर्ष में जहां पत्तियों को पैकेजिंग का मूल और प्राकृतिक रूप माना जाता था, यह कागज, कपास, जूट के थैलों के उपयोग से विकसित हुआ और 1990 में यह लकड़ी की गाड़ियों में आया, भारी मात्रा में लुगदी और कागज द्वारा समर्थित सामग्री के परिवहन के लिए बक्से नाजुक अच्छे और खराब खाद्य पदार्थ के भीतर पैकेजिंग की शुरुआत हुई। इस पद्धति का पालन ज्यादातर ग्रामीण भारत में किया गया और शहरों की ओर विकसित हुआ।

यदि हम भारत के मानचित्र को देखें तो आप कल्पना कर सकते हैं कि इसे किस तरह से विकसित किया गया है। मुंबई, दिल्ली, पंजाब, बेंगलुरु कोलकाता, आदि शहरों में प्रिंटिंग मैन्युफैक्चरर्स ने अत्याधुनिक तकनीक के लिए खुद को अनुकूलित किया, जो लगातार उन्नत हो रहा है और ग्राहकों की मांग में उतार–चढ़ाव हो रहा है, मुद्रण व्यवसाय केवल तभी विकसित हो सकते हैं जब नवीनतम तकनीक से लैस हों।

भारत में उपर्युक्त राज्यों और शहरों में शहरीकरण का कारण अधिक देखा गया क्योंकि इसे वैश्विक दृष्टिकोण से विकसित राज्य और शहर माना जाता था। जब मेट्रो शहरों का गठन किया

प्रिंटर्स बंधुओं को यह लेख प्रिंटिंग उद्योग के भविष्य में होने वाले क्रांतिकारी परिवर्तनों को समझने के लिए अवश्य पढ़ना चाहिए और विशेषज्ञों से सलाह–मशवरा करना चाहिए।

PRINT TECH INDIA
PRINT TECH INDIA
8/1A/4, Site 4, Sahibabad, Ghaziabad (U.P.)
Google Maps Location : https://goo.gl/maps/3pcYD2Lmmpx
M.: 9899572510, 9555884221
printtechindia@hotmail.com, www.bharatprintingagency.com

BPA Bharat Printing Agency
Authorised Dealer :
HUBERGROUP INDIA PVT LTD TECHNOVA IMAGING SYSTEM PVT LTD
MACHINERY SPARE PARTS MATCHING CENTER HOT MELT GLUE
1449/73, Durga Puri Main, 100 Feet Road, Shahdara,
Delhi-110093 (INDIA) Ph.: 011-22131169
E-mail : sharmamanoj70@gmail.com

VLF CTCP SIZE : 56x76
HEIDELBERG KOMORI
MODERN PROCESS STUDIO
8/1A/4, Site 4, Sahibabad, Ghaziabad (U.P.)
E-mail : onlinectcp@gmail.com Ph.: 0120-4272183
KBA AKIYAMA
VLF CTCP SIZE : 56x76

गया था, तब उन्नत माल के परिवहन के लिए आवागमन और सुलभता थी।

बढ़ती आबादी और प्रौद्योगिकी के साथ पैकेजिंग उद्योग शुरू में खाद्य और पेय पदार्थ, और फार्मास्यूटिकल्स उद्योगों पर सबसे ज्यादा हावी था, भले ही कंप्यूटर और इंटरनेट पेश का दौर आ चुका था। और ऑनलाइन खरीद निर्माताओं और थोक विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं या व्यापार वर्ग के लोगों द्वारा ज्यादातर की गई थी, लेकिन सहस्राब्दी पीढ़ी में ई–कॉमर्स और ई–रिटेल को एक के लिए पेश किया गया था और यहां तक कि मध्यम वर्ग की आबादी भी अपने उत्पाद को ऑनलाइन खरीदने में सक्षम थी। ई–कॉमर्स ने सभी तरह के काम, बिजनेस –टू–बिजनेस (बी 2 बी), बिजनेस–टू–कंज्यूमर (बी 2 सी), कंज्यूमर–टू–कंज्यूमर (C2C), आदि के लिए रास्ते खोल दिए।

ई–कॉमर्स में इस तरह की अचानक वृद्धि के साथ प्रिंट उद्योग को सफलता, विकास और विकास के लिए एक कैरियर के रूप में देखा गया। आर्थिक सर्वे ने कहा कि भारतीय पैकेजिंग उद्योग का वार्षिक कारोबार + 32 बिलियन वर्ष 2025 तक पहुंच जाएगा।

लेकिन जैसा कि हमने कहा कि यह एक विविध उद्योग है, हालांकि व्यापार के अवसर अधिकांश राज्यों में समान हैं। हालांकि, नवीनतम प्रिंटिंग उपकरण खरीदने और अपग्रेड तकनीक खरीदने के लिए फंड की पहुंच बाजार में छोटे और मध्यम स्तर के प्रिंटिंग मैन्युफैक्चरर्स के लिए एक बड़ी चुनौती है। इसके अलावा मांग को पूरा करने में असमर्थ मुद्रण गुणवत्ता को बनाए रखना।

राजस्थान या उत्तर–पूर्व भारत के एक छोटे से गाँव या कस्बे पर विचार करें, यात्रा के दौरान शहरीकरण की दिशा में विकसित होकर कई छोटी

रिटेल फर्में, स्थानीय व्यापार और नौकरी के अवसर पैदा हुए, कई कॉरपोरेट फर्म्स इस शहर को एक नए बिजनेस डेस्टिनेशन के रूप में मानेंगे। लेकिन चुनौतियां तब आती हैं जब शहर में विकास के लिए गुणवत्ता सेवा प्रदान करने के लिए सीमित संसाधन होते हैं।

इस मामले में, ये उद्योग या संगठन गुणवत्ता वाले उत्पादों और सेवाओं की आउटसोर्सिंग का विकल्प चुनते हैं। छपाई उद्योग में भी ऐसा ही हुआ। यदि दूरस्थ, ग्रामीण क्षेत्रों, छोटे शहरों में स्थानीय व्यवसायों के लिए गुणवत्ता और अत्याधुनिक परिणाम प्रदान करने की सुविधा है, तो कोई भी उन्हें भारत की औद्योगिक अर्थव्यवस्था में भारी योगदान देने से नहीं रोक सकता है।

अब, नए एवेन्यू को देखें, जिसे ई–कॉमर्स कहा जाता है, जहां यह केवल दैनिक उपयोगिता उत्पाद खरीदने या बेचने तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रिंट निर्माताओं को किसी भी प्रकार की प्रिंटिंग सेवा प्राप्त करने के लिए किफायती विकल्प तक पहुंच प्रदान करता है, जिस उत्पाद की भारत के किसी भी कोने से। उन्हें मेट्रो शहरों में आवश्यकता होती है यह एक ऐसा युग है, जहाँ कोई भी छोटे पैमाने पर छपाई करने वाला निर्माता एक क्लिक पर एक आदेश देता है और दरवाजे पर गुणवत्ता का लाभ उठाता है, चाहे वह मुद्रित कोलाटर, फाइलें और फोल्डर, बैग, स्टेशनरी, बक्से अस्पताल स्टेशनरी, बैनर, फ्लेक्स इत्यादि हो।

अब देखते हैं कि यह संस्कृति भारत की अर्थव्यवस्था में मुद्रण उद्योग को कैसे प्रभावित करेगी?

इंटरनेट, ई–कॉमर्स और ई रिटेल मार्केट की बदौलत खरीदारी के वर्चुअल तरीके में बढ़ोतरी हुई है। पारंपरिक दृष्टिकोण में, यह केवल श्रृंखला थी– निर्माता–थोक व्यापारी– उपभोक्ता–उपभोक्ता।

हालांकि इस मुद्दे का यह एकतरफा मुद्दा है, लेकिन इसने विश्व स्तर पर छुआ है और भारत की अर्थव्यवस्था में वृद्धि में मदद की है। इसने रोजगार दिया है, सस्ती विधियों के साथ अच्छी गुणवत्ता की खरीद और सभी वर्ग की आबादी के उपभोक्ताओं के हाथों में बिजली। मुद्रण उद्योग को बनाए रखने में मदद करने के लिए पर्यावरण के अनुकूल वातावरण बनाए रखें।

यह मुद्रण उद्योग के बारे में एक छोटा सा संक्षिप्त विवरण था । जहां हम तेजी से बढ़ रहे हैं, हालांकि अभी भी ऐसी जगहें हैं जहां हमारी कमी है, शहरों के द्वारा भारत के अपने उप नगरों का भविष्य अभी भी विकसित किया जा रहा है और सरकार को भी प्रोत्साहित करना और सुविधाएं देना है। मुद्रण कंपनियों को और अधिक विकसित करने के लिए उनका सुनहरा भविष्य इंतजार कर रहा है।

स्मृति शेष

हिन्दुस्तान ऑफसेट प्रैस के स्वामी और डीपीए के पूर्व कार्यकारिणी सदस्य श्री गिरधारी लाल कथूरिया के दुखद निधन पर एसोसिएशन अपनी संवेदनाएं और श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

स्मृति शेष

डीपीए के पूर्व उपाध्यक्ष एवं अल्फा ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस के श्री मो. मुस्तकीम के छोटे भाई श्री मो. हाजी के दुखद निधन पर एसोसिएशन अपनी संवेदनाएं और श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

स्मृति शेष

डीपीए के कार्यकारिणी के सदस्य एवं विद्या फार्म्स प्रा. लि. के श्री शिव मित्तल की माता जी श्रीमती शकुन्तला मित्तल के दुखद निधन पर एसोसिएशन अपनी संवेदनाएं और श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

KALRA HAPPY PAPERS
Deals in: All Kinds of Paper & Board, Imported, Indian & SBS Board
Regd. Office: 9A, R-Block, G T Road, Dilshad Garden, Delhi-110 095
Branch Office: K-92, 1st Floor, Sector-5, DSIIDC Indl. Area, Bawana, Delhi-110 039
Contact: 9811229178, 9811599178, 011-40045535 • E-mail: kalrahappypapers@gmail.com
YNK PAPERS
145, Pocket-C, IFC Ghazipur Paper Market, Delhi-110 096
Contact : 9811619178, 9899831314 • E-mail: info@ynkpapers.com

सत्य और भ्रम

क्या कागज छूने से भी कोरोना फैलता है?

पिछले कुछ दिनों से व्हाट्एप ग्रुप और सोशल मीडिया साइटों पर कई तरह की बहस चल रही हैं. यह नए कोरोना वायरस के इर्द–गिर्द होती है. क्या छूना सही है क्या गलत है? क्या डिलीवर किया गया पैकेट छूना चाहिए? क्या ऑनलाइन डिलीवर किए गए ग्रॉसरी और खाने के पैकेट को ले सकते हैं? क्या न्यूजपेपर छूने से कोरोना फैलता है? यूएस सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के अनुसार, जीवित कोशिकाओं के बाहर ज्यादातर सतहों पर कोरोना वायरस बहुत समय तक जिंदा नहीं रहता है. वायरोलॉजिस्ट का कहना है कि जब आप अखबार छूते हैं तो संक्रमण फैलने की आशंका तकरीबन न के बराबर होती है.

कोझिकोड स्थित बेबी मेमोरियल हॉस्पिटल के डॉक्टर अनूप कुमार ने कहा कि अखबार को असुरक्षित कहने का कोई तर्क नहीं है. अगर भीड़भाड़ वाली जगह पर अखबार पढ़ रहे हैं तो संक्रमण फैलने का खतरा ज्यादा है. लेकिन, इसकी वजह अखबार नहीं, बल्कि यह है कि आप सामाजिक दूरी बनाकर नहीं चल रहे हैं. एम्स के डायरेक्टर डॉक्टर रणदीप गुलेरिया के अनुसार, संक्रमित करने के लिए पेपर पर वायरस इतने लंबे समय तक जिंदा नहीं रहते हैं. न ही इनका वितरण कोविड–19 के मरीज करते हैं. लिहाजा, इस तरह का कोई जोखिम नहीं है. जसलोक और कस्तूरबा हॉस्पिटल में संक्रमण रोगों के विशेषज्ञ डॉक्टर ओम श्रीवास्तव ने कहा कि यह सरासर गलत है. अगर अखबार और पैकेज संक्रमण फैला सकते हैं तो इसके सबूत कहां हैं? आईसीएमआर में सेंटर फॉर एडवांस्ड रिसर्च इन वॉयरोलॉजी के चीफ डॉक्टर टी जेकब जॉन ने कहा कि जब हमारे सामने असली खतरा हो तो हमें कल्पनीय खतरों के बारे में सोचकर चिंता करने की जरूरत नहीं है. फोर्टिस सी–डॉक के चेयरमैन डॉक्टर अनूप मिश्रा ने कहा कि अखबार से संक्रमण फैलने की आशंका न के बराबर है. लोगों को अफवाहों पर यकीन नहीं करना चाहिए. इनफेक्शियस डिजीज पर महाराष्ट्र सरकार के तकनीकी सलाहकार डॉक्टर सुभाष सालुंके के मुताबिक, यहां तक कि जो देश इस महामारी से सबसे ज्यादा प्रभावित हैं, वहां भी अखबारों का सर्कुलेशन बंद नहीं है. अखबार को छूना बिल्कुल सुरक्षित है. आज के दिनों में प्रमुख अखबार काफी उच्च तकनीक के साथ प्रिंट होते हैं. इसमें मानवीय हस्तक्षेप न के बराबर होता है. इसके अलावा आज के हालातों में अखबारों ने सुरक्षा के कुछ और उपाय भी किए हैं। ये कदम पाठकों की सुरक्षा को देखते हुए उठाए गए हैं. ऐसे में आप क्यों उन सूचनाओं से दूर रहें जो सटीक और विश्वसनीय हैं. जिन्हें काफी रिसर्च के बाद प्रकाशित किया जाता है। —नवभारत टाइम्स

जन्मदिन और वैवाहिक वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएं

Mr. Satish Malhotra, Permanent Invitee Member of DPA and owner of Swan Press, on Aug 4, 2020

Mr. Prakash Dass, E. C. Member of DPA and owner of Dass Printers, on August 15, 2020

Mr. Prashant Aggarwal, Joint-Secretary of DPA and owner of Sadhana Enterprises on Aug 17, 2020

Mr. Deepak Arora, Former President of DPA and owner of JMD Colour Scan P. Ltd. on Aug 30, 2020

Mr. Sunil Jain, Former President of DPA and owner of Graphic Print on August 31, 2020

Mr. Atul Goel, Treasurer of DPA and onwer of Kaveri Printers P. Ltd. on Sept 18, 2020

Mr. Deepak Bhatia, EC Member of DPA and owner of Deepak Pustak Bandhanalaya on Sept 23,2020

Mr. Sanjay Sharma, EC Member of DPA and owner of Balaji Offset on Sept 25, 2020

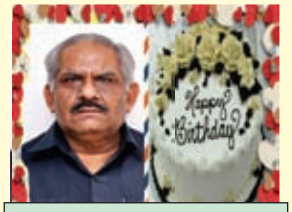

Mr. Ashok Kumar Nandra, Vice-President of DPA and owner of Vipan Packers on Sept. 28, 2020

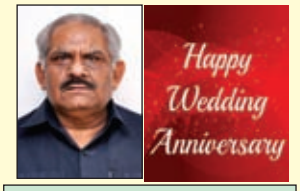

Wedding anniversary of Mr. Ashok Kumar Nandra, Vice-President of DPA and owner of Vipan Packers on Aug. 29, 2020

DDM GRAPHIC

www.ddmgraphic.in

EUROPE'S BEST USED

OFFSET & BINDING MACHINES

HEIDELBERG MITSUBISHI HEAVY INDUSTRIES LTD. RYOBI KBA KOMORI

294, Patpar Ganj Indl. Area, Delhi-92. Mobile: 9871155294, 9311611152

+91-11-43054852, Email: d.d.m.graphic@gmail.com

महामारी के बीच मैगजींस ने कुछ इस तरह लड़ी अपने अस्तित्व की 'जंग'

महामारी 'कोरोनावायरस' (कोविड–19) और लॉकडाउन के कारण तमाम उद्योग धंधों के साथ ही प्रिंट मीडिया इंडस्ट्री पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। हालांकि, इस परेशानी के बीच डिजिटल फॉर्मेट की ओर रुख कर मैगजीन बिजनेस काफी हद तक इससे अलग रहने में कामयाब रहा है। जिन पाठकों को अपने वेंडर्स से मैगजींस नहीं मिलीं, उनमें से अधिकांश ने इन्हें ऑनलाइन पढ़ा है। यही नहीं, लॉकडाउन के बाद देश में पहले अनलॉक के बाद भी ज्यादातर मैगजींस द्वारा कम से कम तीन महीने तक और 'डिजिटल ऑनली' फॉर्मेट में ही उपलब्ध कराए जाने की उम्मीद है।

महामारी का यह दौर जहां इंडस्ट्री के लिए काफी मुश्किलों भरा रहा है, वहीं मैगजीन बिजनेस से जुड़े लोगों का कहना है कि डिजिटल कंटेंट में नए–नए प्रयोग और क्रिएटिव पैकेजिंग ने इस बिजनेस को बचाए रखा है। इसके अलावा, तिमाही, छमाही और वार्षिक सबस्क्रिप्शन ने यह सुनिश्चित किया है कि अधिकांश ब्रैंड्स के लिए मैगजीन का सर्कुलेशन रेवेन्यू बरकरार रहे। हालांकि, कुछ एडवर्टाइजर्स ने अभी अपने कदम पीछे खींच रखे हैं, लेकिन इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स का कहना है कि अधिकांश पाठकों द्वारा इस मीडियम को पसंद किए जाने के बाद मार्केटर्स के भी इस माध्यम के साथ कंफर्टेबल हो जाने की संभावना है।

उदाहरण के लिए 'अमर चित्र कथा' के ऐप पर यूजर्स की संख्या में काफी ग्रोथ देखी गई है। इस बारे में 'अमर चित्र कथा प्राइवेट लिमिटेड' की प्रेजिडेंट और सीओओ प्रीति व्यास का कहना है, 'हमने अपने ऐप को 30 दिनों के लिए फ्री कर दिया और हमें इसके काफी अभूतपूर्व परिणाम देखने को मिले। एक लाख यूजर्स से बढ़कर यह संख्या 5.5 लाख हो गई।' 'अमर चित्र कथा' की ओर से (Tinkle comics, National Geographic) मैगजीन भी पब्लिश की जाती है।

ब्रैंड ने अपनी कंटेंट ऑफरिंग में किस तरह की नई पहल कीं और प्रिंट एडिशन से पाठकों तक ऑडियो और विजुअल भी उपलब्ध कराया, के बारे में व्यास का कहना है कि प्रिंटिंग भले ही महंगी हो लेकिन आइडियाज नहीं। यही नहीं, रीडर्स को अपने साथ जोड़े रखने के लिए पब्लिशर्स ने दो इश्यू के बीच अंतर को भी कम किया। व्यास का कहना है, 'प्रिंटिंग और सर्कुलेशन को लेकर तमाम बाध्यताएं होती हैं, जबकि ऑनलाइन पब्लिशिंग में ऐसा नहीं है। इसलिए हम अपने पाठकों को 15 दिन तक का इंतजार नहीं कराना चाहते थे। दो हफ्ते में 48 पेज पाठकों को उपलब्ध कराने के बजाय हमने हर हफ्ते 20 पेज उपलब्ध कराए। इससे हमने पाठकों को जोड़े रखा।'

वहीं, नवाचारों (innovations) के बारे में केरल से पब्लिश होने वाली फैमिली एंटरटेनमेंट मैगजीन 'मनोरमा वीकली' ने पिछले कुछ महीनों के दौरान प्रत्येक इश्यू के साथ सब्जी के बीज मुफ्त में बांटे। इस बारे में 'मलयाला मनोरमा' के वाइस प्रेजिडेंट (मार्केटिंग और एडवर्टाइजिंग सेल्स) वर्गीस चांडी का कहना है कि इस स्ट्रैटेजी की बदौलत मैगजीन की बिक्री में 30 प्रतिशत का इजाफा हो गया। चांडी के अनुसार, 'यह बीज राज्य सरकार की ओर से उपलब्ध कराए गए थे, जिनका उद्देश्य स्थानीय उपज को बढ़ावा देना था, ताकि लोग अपनी छत पर या खाली जगह में सब्जियां उगा सकें।

इसके साथ ही मैगजीन ने विभिन्न आर्टिकल्स के जरिये यह भी बताया कि कैसे इन बीजों को लगाना है और उनकी देखभाल करनी है। इस पहल की जबर्दस्त प्रतिक्रिया देखने को मिली और पाठक हमसे जुड़े रहे।'

बात जब अर्थव्यवस्था की हो तो अन्य तमाम बिजनेस की तरह कोविड–19 के प्रभाव से मैगजीन भी अछूती नहीं रही हैं। अमर चित्र कथा ने सिर्फ 10 प्रतिशत बिजनेस किया है, जैसा कि वे आमतौर पर करते हैं। इस बारे में व्यास का कहना है कि हमारी एडिटोरियल टीम द्वारा की गईं वर्कशॉप की काफी अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। जिन लोगों ने इसे अटैंड किया उन्होंने एक सेशन के लिए 500 और पांच दिन के सेशन के लिए 1499 रुपए का भुगतान किया। 30–40 प्रतिभागियों के साथ ये वर्कशॉप्स अच्छी चल रही हैं और कुछ खर्चों को पूरा भी कर रही हैं। वहीं एडवर्टाइजर्स के बारे में व्यास ने उम्मीद जताई कि अगले तीन से छह महीनों में एडवर्टाइजर्स वापस आएंगे।

वहीं, केरल के बारे में चांडी का कहना है, 'स्थानीय पाठकों ने मैगजींस पढ़ना कभी बंद नहीं किया है। चूंकि हमारे पास कंटेंट है, पाठक हैं और राज्य के समर्थन के साथ अच्छी पहुंच है, इसकी वजह से हम कोविड–19 का सामना अच्छी तरह से कर सके हैं। ब्रैंड्स को बेहतर रिटर्न के लिए इस तरफ देखना चाहिए। एजुकेशनल से लेकर ऑटोमोबाइल्स, एफएमसीजी और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे कुछ सेक्टर्स मैगजींस में पहले विज्ञापन देंगे।' एक्सपर्ट्स का कहना है कि लग्जरी ब्रैंड्स भी मैगजींस पर अपने विज्ञापन देना जारी रखेंगे, क्योंकि अब बिजनेस दोबारा से शुरू होने लगेंगे। हालांकि, एडवर्टाइजर्स के इस वर्ग को लुभाने के लिए मैगजींस को अपनी पेशकश में तमाम नई पहल करनी होंगी।

NARSINGH & COMPANY
HO: 2241/36, 1st Floor, Kucha Challan, Daryaganj, New Delhi -110002
Phone: 011-23280705, 23269068
Mobile No: 9313515899, 9650453034, 9555707274,
Email: narsinghgraphic@hotmail.com; sagar.screen147@gmail.com

SAGAR SCREEN
HO: 3601, Gali Hakim Bua wali, Shyam Bhawan, Netaji Subhash Marg, Daryaganj, New Delhi -110002
Phone: 011-23265826, 23269068
Mobile No: 9555707274, 9313515899, 9650453034,
Email: sagar.screen147@gmail.com

KHUSHI RAM & SONS
G-147 (Basement), Sector-63, Noida -201301 (U.P.)Phone: 0120-2406271 / 72
Mob: 9313515899, 9555707274,
Email: khushiramsons148@gmail.com: narsinghgraphic@hotmail.com; sagar.screen147@gmail.com

BO: Plot No. 472Patparganj Indl. Area, Delhi-110092, Ph.:011-45585304, Mob.: 9313515899, 9555707274, 9971685304

AUTHORIZED DEALER : Hubergroup India Pvt. Ltd., Siegwerk India Pvt. Ltd, Zenith Rubber Limited, Fujikura Rubber, Blankets, KRS Royal Green Blankets, Technova Inkjet Media, Technova Plates & Chemicals. **STOCKIST:** Damping Hose, Glass Balls, KRS Royal Green Blankets, Rubber Blankets (Fujikura, Cow & Valcon Reavees, Sawa, etc), Loyee, Graphic Art Films (Fuji)Tapes (Panfix, Comat, Classic) Arabic Gum & Machine Gum and other offset processing & Printing materials, STC Chemicals, Carbon Rod, Astolen Sheet, etc.

लॉकडाउन से जबरदस्त आर्थिक संकट में प्रिंट मीडिया

कोरोना महामारी के दौर में भारतीय मीडिया पर व्याप्त संकट अत्यधिक भयावह रुख अख्तियार कर रहा है। देश की अर्थव्यवस्था के संकट ने दुनिया के साथ ही मीडिया के आर्थिक तंत्र की कमर तोड़ दी है। प्रिंट मीडिया सबसे बुरे दौर में है। भारत में दो दशक से बहुत तेजी से आगे बढ़े टीवी चौनलों व एकाएक उभरे डिजिटल व पोर्टल मीडिया को अब अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए बुरी तरह जूझने को विवश कर दिया।

भारत मीडिया को तमाम तरह की उलटबांसियों के बावजूद एक उभरती आर्थिक शक्ति के बतौर यहां मीडिया को भी स्वतंत्र व गतिमान, उद्योग के तौर पर देखा जाता रहा है। लॉकडाउन के संकट ने 25 मार्च के बाद से ही सबसे पहले प्रिंट व टेलीविजन मीडिया में सभी विज्ञापनों से आमद एकदम ठप हो गई। टीवी चौनलों का जिन निजी कॉरपारेट कंपनियों पर विज्ञापनों का बकाया भुगतान था, वह तो बंद हुआ ही आगे की विज्ञापन बुंकिग भी बंद हुई, पिछला भुगतान भी अटक गया। केंद्र सरकार के विज्ञापनों पर तो एक तरह से ताला ही लग गया।

2016 के आखिर में नोटबंदी और जीएसटी के दौर से ही भारतीय प्रिंट मीडिया की हालत पहले से ही खस्ता हालत में चल रही थी क्योंकि कई बड़े अखबार समूहों ने देश के कई हिस्सों से अपने संस्करण तो समेटे ही उन जगहों पर अपने स्टाफ की भी छुट्टी कर दी। संस्करणों वाले अखबारों ने लॉकडाउन के बाद से ही सबसे पहले अखबारों के पृष्ठों में भारी कटौती कर डाली। प्रिंटिंग ऑर्डर तो कम किए ही अपने प्रसार क्षेत्रों में भी कटौती कर दी क्योंकि बड़ी तादाद में अखबार बांटने वाले हॉकर व एजेंटों के सामने अखबार वितरण का संकट खड़ा हो गया। ज्यादातर क्षेत्रों में लोगों ने कोरोना वायरस के डर के मारे दरवाजे व बालकनियों पर गिरे अखबारों पर हाथ लगाना भी बंद कर दिया। इस मामले में टीवी चौनलों की टीआरपी पहले की अपेक्षा बढ़ी है। घरों में कैद लोगों के पास कोई और उपाय भी नहीं है।

इससे भी बड़ा संकट मीडिया उद्योग के उन हजारों–लाखों लोगों पर पड़ा जो पूरे देश के लोगों को सुबह सुबह ताजा तरीन खबरें पढ़ाने में पर्दे के पीछे जी जान से काम करते हैं। इनमें बड़ी तादाद में फील्ड से खबरें लाने वाले रिपोर्टर–पत्रकार से लेकर डेस्क व फीचर, ले आउट डिजाइन, प्रोडक्शन से लेकर सेल्स मार्केटिग के पूरे चक्र का पहिया ही ठप हो गया। इस क्षेत्र में लाखों लोगों व उनके परिजनों पर संकट बढ़ा है। देश के सबसे बड़े मीडिया समूहों ने अपने पत्रकारों के वेतन में भारी कटौती कर दी। इससे उन मीडिया कर्मियों पर सबसे ज्यादा संकट आन पड़ा है जो कई साल से मीडिया में काम करते आ रहे हैं। उनके मासिक वेतन से ही घर, कार की किश्तें, बच्चों के स्कूलों की मोटी फीसें जाती हैं और बीमार बुजुर्गों के महंगे ईलाज की भारी जिम्मेदारी है।

मीडिया समूहों को सबसे ज्यादा संकट अपने–अपने संस्थान के रेवेन्यू मॉडल के ध्वस्त हो जाने के कारण हुआ है। जब सर्कुलेशन नहीं है तो अधिकांश विज्ञापनदाताओं ने अगले दिन से मुठ्ठियां बंद कर दीं। दक्षिण भारत के सबसे बड़े प्रिंट मीडिया ग्रुप मलयालम मनोरमा समूह की पत्रिका

'द वीक' के संपादक एस सच्चिदानंद मूर्ति कहते हैं, कि कोरोना संकट के लॉकडाउन के चलते जो संकट मीडिया उद्योग पर ऊपरी तौर पर दिख रहा है, वास्तव में संकट उससे भी बड़ा व भयावह है। सबसे ज्यादा मुश्किल सूचनाओं के संकट का है। लोगों की निर्भरता प्रिंट अखबारों के बजाय मात्र टीवी मीडिया पर बढ़ गई है। चैनलों की खबरें मात्र शहरों पर केंद्रित रहती हैं, ऐसी सूरत में देश के विशाल ग्रामीण भारत से जुड़ी हुई खबरें, सूचनाएं और उनके आसपास की घटनाओं से पूरे एक माह से भी ज्यादा वक्त से सारे लोग महरूम हैं।

प्रिंट मीडिया हो, टीवी मीडिया, उनके फील्ड रिपोर्टर, सहयोगी स्टाफ, कैमरामैन, फोटो जर्नलिस्ट और उनको लाने ले जाने वाले वाहन चालकों के स्वास्थ्य पर संकट खड़ा हो गया है। बड़ी तादाद में कोरोना संक्रमण रोगियों वाले अस्पतालों में समाचार संकलन करने वाले मीडिया कर्मियों की जान खतरे में पड़ गई है। कोलकाता में वरिष्ठ प्रेस फोटोग्राफर रोनी राय की हाल में मौत कोरोना संक्रमण से हो गई। महाराष्ट्र देश ऐसा बड़ा राज्य है जहां लोगों तक रोज नई नई सूचनाएं और जानकारियां पहुंचाने वाले पत्रकार कोरोना की चपेट में आ गए।

दिल्ली में कुछ फोटोग्राफर व स्टाफ भी चपेट में है। काम के दौरान पत्रकारों को सुरक्षा के बारे में केंद्र सरकार की ओर से राज्यों को न तो कोई दिशा निर्देश दिए गए हैं और ना ही राज्य सरकारें इस काम के लिए आगे आयी हैं। देश के कई पत्रकार संगठनों ने केंद्र व राज्य सरकारों से मांग की है कि वे इस कोरोना महामारी की चपेट में आए पत्रकारों का भी सरकारी कर्मचारियों की भांति जीवन बीमा कराएं तथा कठिन विपरीत परिस्थितियों में काम करने की वजह से संक्रमित होने पर सरकारी खर्च पर उनका उपचार हो और मृत्यु की दशा में वही मुआवजा मिले जो जरूरी सेवा में जुटे पुलिसकर्मियों को मिल रहा है।

–उमाकांत लखेड़ा

RHINE SOLAR LIMITED
MANUFACTURERS OF SOLAR MODULES (10W - 325W)
THE SUN THAT NEVER SETS

Regd. Office: -
A-75/4, 2nd Floor,
Wazirpur Industrial Area
New Delhi - 110052
Ph.: - +91-11-45510515
+91-11-45501254

Sales Office: -
907,Aggarwal plaza-1,
Netaji Subash Palace,
Pitampura, New Delhi-110034
+91-11-45615111

Work: -
417, EPIP, Phase-III
Kundli Industrial Estate,
Sonepat, Haryana-131028
+91 130 2371331

Email : shiv@rhinesolar.in ● Web : www.rhinesolar.in